

संतानोंके दुर्योगहार एवं उत्पीड़न से जटिल होती वृद्धावस्था

सास्यासत का पहलवाना न कह तबू उखाड़ लाकर आसमान का फिर भी तसल्ली नहीं। युद्ध के माहोल में हो रही राजनीति का असर यह कि जनता को भरोसा नहीं कि वह चुन किसे रही। सोलन नगर निगम के द्वाई साल के बाद मेयर के चुनाव ने कांग्रेस के आधिकारिक उम्मीदवारों को शिक्षित देकर जो खेल किया, उसके जख्म अब हो रहे। नगर निगम के मेयर व पूर्व मेयर की हस्ती अब सरकार की कार्रवाई ने छीन ली, नतीजतन उपचुनाव का खाका कई बड़े सवालों के खाक नहीं कर पाएगा। अस्थिरता के दामन में मतदाता की आशा और कसुरवार होते विकास के नैन नक्शा। हर मुरुझे में लुट रहा है सिंहासन, चले फिर से कोई नया फारमूला बनाए। जाहिर है नगर निगम सोलन की पताका बदलेगी और कछ इसी तरह की सुगंगुणाहट धर्घसाला नगर निगम के लोहले में है। ऐसे में प्रश्न यह कि स्थानीय निकायों में भी अगर अस्थिरता के बीज जोने के लिए राजनीतिक महत्वाकांक्षा ही जिमेदार है, तो जनता की अभिलापा बचेगी कहां। आश्रय यह कि जिस जरूरत का नाम नगर निगम है, उसकी जरूरत में राजनीति की जरूरतें पूरी हो रही हैं और यह खेल तब तक राजी रहेगा जब तक मेयर पट के लिए प्रत्यक्ष चुनाव नहीं होते। अप्रत्यक्ष कंधों पर चढ़ रहे मेयर युं चौपे चढ़दें और उत्तरत रहेंगे। सियासत जे निःघड़ी में कांग्रेस को गच्छा देकर मेयर चुना, कमेवेश वही परिस्थितियां अब नए हालात में नियंत्रण करेंगी। ये नियंत्रण नाजर शर्मनाक हैं और थीर-धीर हिमाचल को थोर अस्थिरता के जंगल में धकेल रहे हैं। कब हम सोलन शहर के भविष्य के लिए नगर निगम के पार्षद और पार्षदों के पार्षद यानी मेयर को इस नीयत से चुन पाएंगे कि यह नागरिक समाज अपेक्षा लह पाए। कहाना न होगा कि दिमाजल के पार्जों



लालत गग लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

१४८

शा हा नहा, दुनया म वृद्ध के साथ दुर्व्ववहर, प्रताड़ना, हिंसा बढ़ती जा रही है, जो जीवन को नरक बनाये हुए है। बच्चे अपने माता-पिता के साथ बिल्कुल नहीं रहना चाहते। यही पीड़ा वृद्धजन को पल-पल की घुटन, तनाव एवं उपेक्षा से निकलकर वृद्धाश्रम जाने के लिए विश्व करती है। संतान द्वारा बुजुर्गों की आवश्यकताओं को पूरा न करना गरिमा के साथ स्वतंत्र जीवन जीने जैसे मानवाधिकारों का हनन है। संयुक्त परिवरों के विघटन और एकल परिवरों के बढ़ते चलन ने इस स्थिति को नियंत्रण से बाहर कर दिया है। एक बड़ा प्रश्न है कि वृद्धों की उपेक्षा एवं दुर्व्ववहर के इस गलत प्रवाह को किस तरह से रोके? क्योंकि सोच के गलत प्रवाह ने न केवल वृद्धों का जीवन दुश्वार कर दिया है बल्कि आदमी-आदमी के बीच के भावात्मक फासलों को भी बढ़ा दिया है। वृद्धों के जीवन से जुड़ी इस विकट समस्या के समाधान के लिये ही विश्व बुजुर्ग दुर्व्ववहर जागरूकता दिवस हर साल 15 जून को मनाया जाता है। इस दिन की शुरुआत सबसे फले 2011 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा बुजुर्गों द्वारा अनुभव किए जाने वाले दुर्व्ववहर के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए काम करने वाले हाँ बढ़तों का समर्थन करें। अनुसार, बुजुर्गों के साथ दुर्व्ववहर को हाँ बढ़ाने के लिए बार-बार की गई हरकत, या उचित कार्रवाई की कमी के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो किसी भी रिश्ते में घटित होती है, जहाँ विश्वास की उम्मीद होती है, जो किसी बुजुर्ग व्यक्ति को नुकसान या परेशानी पहुँचाती है। यह एक वैश्विक समाजिक एवं परिवारिक मुद्दा है जो दुनिया भर में लाखों बुजुर्गों के स्वास्थ्य और मानवाधिकारों को प्रभावित करता है और एक ऐसा मुद्दा है जिस पर अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को ध्यान देने की आवश्यकता है। विश्व बुजुर्ग दुर्व्ववहर जागरूकता दिवस 2024 की थीम ह्यासभी पहचानें की बुजुर्ग पीड़ितों के लिए समान, सुरक्षा और कल्याण को प्राथमिकता देनाहै। याद रखें, बुजुर्गों के साथ दुर्व्ववहर को रोकने में छोटी-छोटी कदम भी अहम भूमिका निभा सकते हैं। उन लोगों की आवाज बनें जो खुद के लिए बोलने में सक्षम नहीं हैं, दूसरों को शिक्षित करें और बुजुर्गों की सुरक्षा के लिए काम करने वाले संगठनों का समर्थन करें। साथ मिलकर, हम एक ऐसी दुनिया बना सकते हैं जहाँ हर बुजुर्ग अपने बुद्धापे को गरिमा, आत्मसम्मान, सुरक्षा और स्थिरता के साथ जा सके।

विश्व बुजुर्ग दुर्व्ववहर जागरूकता दिवस एक प्रयोगजात्मक अवसर एवं उत्सव है। यह दिन उन तरीकों को खोजने के लिए भी मनाया जाता है कि किसे समाज में बुजुर्ग लोगों की उपेक्षा, दुर्व्ववहर एवं उनके प्रति बरती जा रही उदासीनता की त्रासदी से उन्हें मुक्ति देकर उन्हें सुरक्षा कवच मानन की सोच को विकसित किया जाये ताकि वृद्धों के स्वास्थ्य, निष्ठांटक एवं कुंठारहित जीवन को प्रबोधित किया जा सकता है। वृद्धों को बंधन नहीं, आत्म-गौरव के रूप में स्वीकार करने की अपेक्षा है। वृद्धों को लेकर जो गंभीर समस्याएं आज पैदा हुई हैं, वह अचानक ही नहीं हुई, बल्कि उपभोकावादी संस्कृति तथा महानगरीय अधुनातम बोध के तहत बदलते समाजिक मूल्यों, नई पीढ़ी की सोच में परिवर्तन आने, महंगाई के बढ़ने और व्यक्ति के अपन बच्चों और पती तक सीमित हो जाने की प्रवृत्ति के कारण बड़े-बड़ों के लिए अनेक समस्याएं आ खड़ी हुई हैं। चिन्तन का महत्वपूर्ण पक्ष है कि वृद्धों की उपेक्षा एवं दुर्व्ववहर का कारण बुद्ध व्यक्ति अक्सर गतिशीलता संबंधी समस्याओं, पुरानी स्वास्थ्य स्थितियों वा सामाजिक अलगाव का समान करत है। इसके अतिरिक्त, आपात स्थितियों का तनाव और अराजकता शारीरिक, भावनात्मक, वित्तीय या उपेक्षा सहित बुजुर्गों के साथ दुर्व्ववहर के जोखिम को बढ़ा सकती है। आपातकालीन स्थितियों में वृद्ध व्यक्तियों द्वारा समान की जाने वाली विशिष्ट चुनौतियों के बारे में जागरूकता बढ़ाकर, हम अधिक समावेशी और सुरक्षात्मक वातावरण को बढ़ावा दे सकते हैं।

बुजुर्गों के साथ दुर्व्ववहर एक ऐसी वैश्विक समस्या है जो विकासशील और विकसित दोनों देशों में मौजूद है, हालाँकि बुजुर्गों के साथ दुर्व्ववहर की सीमा अज्ञात है, लेकिन इसका समाजिक और नैतिक महत्व स्पष्ट है। नये विश्व की उन्नत एवं आदर्श संचना बिना वृद्धों की समानजनक स्थिति के संभव नहीं है। वर्किंग बहुओं के ताने, बच्चों को टहलाने-घुमाने की जिम्मेदारी की फिल्म में प्रायः जहाँ पुरुष वृद्धों की सुवह-शाम खप जाती है, वहीं महिला वृद्ध एक नौकरीनी से अधिक हैसियत नहीं रखती। यदि परिवार के वृद्ध कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं, रुग्णवस्था में बिस्तर पर पड़े कराह रहे हैं, भरण-पोषण को तरस रहे हैं तो यह हमारे लिए वास्तव में लज्जा एवं शर्म का विषय ह। वृद्ध उत्तमानुदारी वाक्यों का बड़ा विवरण है। वृद्ध अपने ही घर की दहलीज पर सहमा-सहमा खड़ा है, वृद्धों की उपेक्षा स्वस्थ एवं सृस्कृत परिवार परम्परा पर काला दाग है। हम सुविधावादी एकांगी एवं संकीर्ण सोच की तंग गलियों में भटक रहे हैं तभी वृद्धों की आंखों में भविष्य को लेकर भय है, असुरक्षा और दहशत है, दिल में अत्यहीन दर्द है। इन त्रासद एवं डरावनी स्थितियों से वृद्धों को मुक्त दिलानी होगी। इसके लिये आज विचारकांति ही नहीं, बल्कि व्याकृतिकांति एवं परिवर्कांति की जरूरत है। हमारा भारत तो बुजुर्गों को भावावन के रूप में मानता है। ज्ञातहास में अनेकों ऐसे उदाहरण हैं कि माता-पिता की आज्ञा से भावावन श्रीराम जैसे अवतारी पुरुषों ने राजपाट त्याग कर बनों में विचरण किया, मातृ-पितृ भक्त ब्रह्मणु कुमार ने अपने अन्ध माता-पिता को काँवड़ में बैठाकर चारधाम की यात्रा कराई। परिवर्कों आधुनिक समाज में वृद्ध माता-पिता और उनकी संतान के बीच दूरियां बढ़ती जा रही हैं। आज वृद्धों को अकलापन, परिवार के सदस्यों द्वारा उपेक्षा, दुर्व्ववहर, तिरस्कार, कटुकियां, घर से निकाले जाने का भय या एक छत की तलाश में इधर-उधर भटकने का गम हरदम सालता रहता। वृद्ध समाज इतना कुतूंठ एवं उपाकृत क्या है, एक अहम प्रश्न है। प्रधानमंत्री ने नरन्द मार्दी एवं उनकी सरकार अनेक स्वरूप एवं आदर्श समाज-निर्माण की योजनाओं को आकार देने में जुटी है, उन्हें वृद्धों को लेकर भी चिन्तन करते हुए हैरान कल्याण योजनाओं को लागू करना चाहिए, ताकि वृद्धों की प्रतिभा, कौशल एवं अनुभवों का नये भारत-सशक्त भारत के निर्माण में सुमुचित उपयोग हो सके एवं आजादी के अमृतकाल को वास्तविक रूप में अमृतमय बना सके। संयुक्त राष्ट्र ने विश्व में बुजुर्गों के प्रति ही रहे दुर्व्ववहर और अन्याय को समाप्त करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय है। बड़े बड़ों के साथ दुर्व्ववहर देखकर लगता है जैसे हमारे संस्कृतकाल वृद्धों के साथ विचारकांति के जरूरत है वृद्ध व्यक्तियों को भावावन के रूप में मानता है। ज्ञातहास में अनेकों ऐसे उदाहरण हैं कि माता-पिता की आज्ञा से भावावन श्रीराम जैसे अवतारी पुरुषों ने राजपाट त्याग कर बनों में विचरण किया, मातृ-पितृ भक्त ब्रह्मणु कुमार ने अपने अन्ध माता-पिता को काँवड़ में बैठाकर चारधाम की यात्रा कराई। परिवर्कों आधुनिक समाज में वृद्ध माता-पिता और उनकी संतान के बीच दूरियां बढ़ती जा रही हैं। आज वृद्धों को अकलापन, परिवार के सदस्यों द्वारा उपेक्षा, दुर्व्ववहर, तिरस्कार, कटुकियां, घर से निकाले जाने का भय या एक छत की तलाश में इधर-उधर भटकने का गम हरदम सालता रहता। वृद्ध समाज संवेदनशून्य होता है।

आओ गगा नहाए हम और आप भी

हैं जिनका को पुनर्हान हैं जिनका जापानी गारामान्या नहीं बूस करता है। जिनका सामग्री का प्रमाणित करने के लिए गंगा जल उठाते हैं। पाप निवारण के लिए गंगा स्नान करते हैं। और जब कोई बड़ा काम सम्पन्न करने में कामयाब हो जाते हैं तो राहत की सांस लेते हुए कहते हैं - चलिए हमें तो गंगा नहा ली। गंगा के बारे में हर भारतीय जानता है। पूरब का हो, चाहे पश्चिम का, उत्तर का हो या दक्षिण का, सबके लिए गंगा का महत्व है। ये बात अलग है कि सबकी गंगा अलग - अलग है। गंगा दरअसल प्रयाग या हरिद्वार में ही नहीं बहती, बल्कि हर व्यक्ति के मन में बहती है। समस्या ये है कि इन तमाम गंगाओं का मिलन होना सुनिश्चित नहीं है। आपने राजकपूर की फिल्म संगम तो देखी ही होगी। इस फिल्म का शीर्षक गीत है ये सवाल खड़े करता है कि तेरे मन की ओर मेरे मन की गंगा का मिलन होगा या नहीं ? गीतकार शैलेन्द्र ने जब ये गीत लिखा और शंकर - जयकिशन ने इसे संगीतबद्ध कर मुकेश से गवाया था तब ये सोचा भी न होगा कि गंगा एक समय में यथा - प्रश्न बन जाएगी और कार्ड भी इस सवाल का जवाब नहीं दे पायेगा कि हमारे - आपके मन की गंगा का मिलन आज की सियासत होने देगी या नहीं ? ईश्वर के वजूद को लेकर अक्सर मेरे मन में प्रश्न रहते हैं कि किन्तु गंगा को लेकर मेरे मन में कभी कोई दुविधा नहीं रही। मैंने जब से होश सक्ता है गंगा को विभिन्न रूपों में देखा है। गंगा के प्रति आपने पूर्वजों के मन में आगाध शृद्धा देखी है हम भारतीयों में से बहुत से आज भी किसी कानून से, किसी अदालत से भले ही न डरते हों लेकिन गंगा से डरते हैं



राकेश अचल सेवा निवृत्त उप महाप्रबंधक

ੴ ਬਾਬੇ

गंगा के बारे में हर भारतीय जानता है। पुरब का हो, चाहे पश्चिम का, उत्तर का ही या दक्षिण का, सबके लिए गंगा का महत्व है। ये बात अलग है कि सबकी गंगा अलग-अलग है। गंगा दरअसल प्रयाग या हरिद्वार में ही नहीं बहती, बल्कि हर व्यक्ति के मन में बहती है। समस्या ये है कि इन तमाम गंगाओं का मिलन होना सुनिश्चित नहीं है। अपने राजकपूर की फिल्म संगम तो देखी ही होगी। इस फिल्म का शीर्षक गीत है ये सवाल खड़े करता है कि तेरे मन की और मेरे मन की गंगा का मिलन होगा या नहीं? गीतकार शैलेन्द्र ने जब ये गीत लिखा और शंकर-जयकिशन ने इसे संगीतबद्ध कर्म देखा है। हम भारतीय में सब बहुत से आज भी किसी कानून से, किसी अदालत से भले ही न डरते हो लेकिन गंगा से डरते हैं। उनका डर सम्मान की बजह से है। हर भारतीय आज भी गंगा को पाप-नाशिनी मानता है। पतित-पावन मानता है। और ये मान्यता जहाँ कि नागरिक अपने परिचय कि तौर पर अपने देश की किसी नदी का इसरोंमाल करते हैं।

चूंकि 16 जून को गंगा दशहरा है, इसलिए मैं आपके समाने गंगा -पुराण लेकर बैठ गया। बरना किसे फुरसत है गंगा पर बात करने की। गंगा को लेकर हम आम भारतीय ही नहीं बल्कि हमारी सरकारें भी बहुत संवेदनशील दिखाई देती हैं लेकिन असल में होती नहीं है। वे दुनिया कि पाप धोने वाली गंगा कि में नहीं, रूस में नहीं। गंगा सिक्के भारत में है और हम शान से गर्व से कहते हैं कि - हम उस देश कि वासी हैं जिस देश में गंगा बहती है। यानि गंगा हमारा आईडेंटिटी है, परिचय पत्र है। दुनिया में शायद ही कोई ऐसा देश हो जहाँ कि नागरिक अपने परिचय कि तौर पर अपने देश की किसी नदी का इसरोंमाल करते हैं।

भगवान शिव को किसी ने नहीं देखा, भगीरथ को किसी ने नहीं देखा करना चाहत, अन्यथा कहा जाएगा कि हम फिर सियासत पर आ गए ! हम और आप साधारण इंसान हैं इसलिए हम और आप ऐसी कोई बात नहीं कर सकते जो असाधारण हो। असाधारण बात करने का हक असाधारण लोगों को ही है। बल्कि असाधारण बातें आजकल के बल अविनाशी लोगों का एकाधिकरण माना जाता है। साधारण बात ये है कि हम गंगा को पूजते हैं लेकिन उसकी फिक्र नहीं करत। हमें गंगा कि प्रति फिक्र मंद होने कि तिए उन देवों से सीखना होगा जिनके पास गंगा तो नहीं है लेकिन उनकी नदियाँ गंगा से सौ गुना ज्यादा स्वच्छ हैं। विदेशी अपनी नदियों कि लिए किसी सरकार पर निर्भर नहीं होते।

छात्र परीक्षा के परिणाम से नियाश न हो। गश्तप्रियलति बद्या संगोजयन्ति आगे बढ़ें पश्च अतश्च द्वैमें सदाहरण्ते। दोना चाहिए और संकट की चाहौती जीवन में साध्या और धैर्य ज

राजप नारवणा

उसकी सहायता करता है। साहस्री पर भी बार-बार विफल होने के कारण या इधर-उधर हट रहा है तथा पतन के कासंकल्प किया है। प्रत्येक स्थिति में सुख का समुज्ज्वल कल्पना करा, आशा और विश्वास के साथ आगे बढ़े

जब दिल टूट रहा हो, तब भी गिर-
पिग्कर अपने को संभालकर उठ खड़ा
समीप जा रहा है। इन्सान को हिम्मत
में प्रसन्न रहना मानों दुर्भाग्य को भी
चलो। एक दिन तुम अवश्य सफल
चर्चाती देना है। वह इन्सान क्या जो
होगे।

A decorative horizontal bar at the bottom of the slide featuring a repeating pattern of small colored dots in various colors including pink, yellow, blue, and grey.

संक्षिप्त खबरें

स्थानीय खबरें

छपारा कार्यालय। राष्ट्रीय सेवा योजना

राजेंद्र कौले के छात्र ने विश्व रक्तदाना

दिवस के अवसर पर रक्त दाना

किया। रक्तदान महादीव के मूल गंड पर

कार्य करने वाला स्वयं सेवक लघुपथ

कुमार नियाम प्रयोक्त वर्ष वार बार

रक्तदान करते हैं। इस के लिए प्राचार्य

सुशील श्रीवास्तव के हालिक शुभकामनाएं

प्रधान करते हुए कहा की ऐसे युवा ही

हमारी धूरह हैं, जो सामाजिक

गतिविधि में बढ़ दृष्ट कर हस्ता लेकर

अपनी सच्ची शिक्षा का परिचय देते हैं।

कार्यक्रम पदाधिकारी ने सभी स्वरूपसेवकों

को रक्तदान के महत्व बारे में बताते हुए

छोटों को रक्तदान हेतु बताया।

छोटी की बिजली जलाने के

मामले में जै रेड से दर्ज कराई

प्राथमिकी

बनियापुर। छोटी से बिजली का

उपयोग करने के मामले में विद्युत

विभाग के जै रेड ने दो लाख रुपये

जुमानी लगाते प्राथमिकी दर कराया है

जिसका इडाहि मपुर गांव नियासी

आदित्य प्रसाद पिता रामप्रवेश प्रसाद

द्वारा बाहिपास मीटर लगाकर बिजली

योरी से उपयोग करने का मामला दर्ज

हो गया। प्राथमिकी के स्वाक्षर

अधिकारी अमरीता कुमारा ने की उक्त

त्वारिका द्वारा गलत ढंग से बिजली की

योरी कर रहा था जिसके विद्युत रसायन

का बाहु नुकसान दुआ वही वी बीका या

जिसका मीटर जस करते उक्त के

विलङ्घ मामला दर्ज कराया गया है।

शादी की नियत से युवती का

अपहरण का मामला दर्ज

बनियापुर। बिजली के पूँछी गाव से

एक युवती की शादी की नियत से

अपहरण के मामले में माता के व्याज

एवं प्राथमिकी दर कराया गया के बारे

लोगों को नामजद किया गया है। घटना

में पीड़िता ने बताया है की पुरी शर्क को

शैक्ष के लिए गाँधी थी, जब कानी देर

तक घर वास नहीं आई तो आसपास

तथा दिसे जाते में कानी खोजनी

की गयी। पीड़िता ने कुशल बारामदी के लिए

पुलेस आग्रह किया है।

बिहार में अपाधियोगी से जानता है

प्रत एनडीए की सरकार है ग्रास:

संघर्ष कुमार

छपारा कार्यालय युवा राजद जिला

उपाध्यक्ष संघर्ष कुमार ने कहा कि दिन

पर दिन अपाधियोगी घटनाएं घटित होता

रहत हैं। लोकेन एंडोडी के नेताओं को

उपरुद्धुमंत्री कहते हैं कि अपाधियोगी

के बारे कुर्सियों बोलें जल राज

की बात करके सुर्वियोग बोलेना चाहते हैं।

क्या अब मानव रात चल रहा है।

खुलाओं अम सरांश दिले में अधिकारीओं

की बिहार के घटनाएं से मातृता की घट

उतार के दिया जाते हैं। भाजा के

उपरुद्धुमंत्री के बारे नामजद

एवं अपाधियोगी के घटनाएं में

उतार के दिया जाते हैं। भाजा के

उपरुद्धुमंत्री के बारे नामजद

एवं अपाधियोगी के घटनाएं में

उतार के दिया जाते हैं। भाजा के

उपरुद्धुमंत्री की बारे नामजद

एवं अपाधियोगी के घटनाएं में

उतार के दिया जाते हैं। भाजा के

उपरुद्धुमंत्री की बारे नामजद

एवं अपाधियोगी के घटनाएं में

उतार के दिया जाते हैं। भाजा के

उपरुद्धुमंत्री की बारे नामजद

एवं अपाधियोगी के घटनाएं में

उतार के दिया जाते हैं। भाजा के

उपरुद्धुमंत्री की बारे नामजद

एवं अपाधियोगी के घटनाएं में

उतार के दिया जाते हैं। भाजा के

उपरुद्धुमंत्री की बारे नामजद

एवं अपाधियोगी के घटनाएं में

उतार के दिया जाते हैं। भाजा के

उपरुद्धुमंत्री की बारे नामजद

एवं अपाधियोगी के घटनाएं में

उतार के दिया जाते हैं। भाजा के

उपरुद्धुमंत्री की बारे नामजद

एवं अपाधियोगी के घटनाएं में

उतार के दिया जाते हैं। भाजा के

उपरुद्धुमंत्री की बारे नामजद

एवं अपाधियोगी के घटनाएं में

उतार के दिया जाते हैं। भाजा के

उपरुद्धुमंत्री की बारे नामजद

एवं अपाधियोगी के घटनाएं में

उतार के दिया जाते हैं। भाजा के

उपरुद्धुमंत्री की बारे नामजद

एवं अपाधियोगी के घटनाएं में

उतार के दिया जाते हैं। भाजा के

उपरुद्धुमंत्री की बारे नामजद

एवं अपाधियोगी के घटनाएं में

उतार के दिया जाते हैं। भाजा के

उपरुद्धुमंत्री की बारे नामजद

एवं अपाधियोगी के घटनाएं में

उतार के दिया जाते हैं। भाजा के

उपरुद्धुमंत्री की बारे नामजद

एवं अपाधियोगी के घटनाएं में

उतार के दिया जाते हैं। भाजा के

उपरुद्धुमंत्री की बारे नामजद

एवं अपाधियोगी के घटनाएं में

उतार के दिया जाते हैं। भाजा के

उपरुद्धुमंत्री की बारे नामजद

एवं अपाधियोगी के घटनाएं में

उतार के दिया जाते हैं। भाजा के

उपरुद्धुमंत्री की बारे नामजद

एवं अपाधियोगी के घटनाएं में

उतार के दिया जाते हैं। भाजा के

उपरुद्धुमंत्री की बारे नामजद

एवं अपाधियोगी के घटनाएं में

उतार के दिया जाते हैं। भाजा के

उपरुद्धुमंत्री की बारे नामजद

एवं अपाधियोगी के घटनाएं में

उतार के दिया जाते हैं। भाजा के

उपरुद्धुमंत्री की बारे नामजद

एवं अपाधियोगी के घटनाएं में

उतार के दिया जाते हैं। भाजा के

उपरुद्धुमंत्री की बारे नामजद

एवं अपाधियोगी के घटनाएं में

उतार के दिया जाते हैं। भाजा के

उपरुद्धुमंत्री की बारे नामजद

एवं अपाधियोगी के घटनाएं में

उतार के दिया जाते हैं। भाजा के

उपरुद्धुमंत्री की बारे नामजद

एवं अपाधियोगी के घटनाएं में

उतार के दिया जाते हैं। भाजा के

उपरुद्धुमंत्री की बारे नामजद

